प्याज (ONION)

भूमि :– प्याज के लिए उचित जल निकास वाली बलुई दोमट भूमि उपयुक्त होती है।

उन्नत किस्में:– *रबी मौसम :* एग्रीफाउण्ड लाईट रेड, एग्रीफाउण्ड डार्क रेड, अर्का निकेतन, अर्का कल्याण, पूसा रेड, पूसा साध्वी, पटना रेड, एन.-53, बसन्त, नासिक रेड, पूना रेड, भीमा सुपर, भीमा रेड। *खरीफ मौसम :* एन.-53, बसन्त, एग्रीफाण्ड डार्क रेड। *संकर प्रभेद :* अर्का कीर्तिमान, अर्का पीताम्बर, अर्का लालिमा।

बोआई का समय : *मुख्य फसल :* नवम्बर से मध्य दिसम्बर; *बरसाती :* जुलाई।

रोपने का समय : *मुख्य फसल :* जनवरी से फरवरी; *बरसाती :* अगस्त से मध्य सितम्बर।

लगाने की दूरी: 15×10 सें.मी.।

खाद तथा उर्वरक की मात्रा (प्रति हेक्टर):–

कम्पोस्ट	: 200 क्विंटल,
स्फूर	: 60 किलो
नेत्रजन	: 100 किलो,
पोटाश	: 80-100 किलो

निकाई गुड़ाई एवं सिंचाई:– खेत को खरपतवार से मुक्त रखने के लिए फसल में 2-3 निकाई गुड़ाई करें। प्याज फसल को अधिक पानी की जरूरत होती है, इसलिए फसल को 7-10 सिंचाई की जरूरत होती है, इसलिए फसल को 7-10 सिंचाई की जरूरत पड़ती है। कंद बनने के बाद आवश्यकतानुसार हल्की सिंचाई ही करें अधिक नमी होने पर कंद फटने की समस्या आती है।

उपज : 200-250 क्विं./हे.।

पौध संरक्षण : कीट

1) थ्रीप्स :

रोकथाम : क) फिप्रोनिल 5% का 1.0 एम.एल. प्रति लीटर पानी के हिसाब से तीन छिड़काव 15 दिन के अंतराल पर करें।

2) प्याज का मैगेट :

रोकथाम : क्विनालफॉस (25 ई.सी.) का 1.5-2.0 मि.ली. या मैलाथियान (50 ई.सी.) का 1 मि.ली. प्रति लीटर पानी के हिसाब से घोल बनाकर छिड़काव करें।

रोग एवं रोकथाम

1) पर्पल ब्लाच/बैंगनी धब्बा :

रोकथाम : 1) मैंकोजेब (3 ग्राम प्रति लीटर) साबुन के घोल का प्रयोग करते हुए छिड़काव करें। आक्रांत पत्तियों को चुनकर खेत से हटाते रहना चाहिए। अच्छी जल निकास युक्त मृदा में इसकी खेती करनी चाहिए।

2) मृदा विगलन : शल्क कन्दों का ऊपरी भाग से मुलायम होकर सड़ना तथा भंडारगृह में दुर्गन्ध देना इसके लक्षण हैं।

रोकथाम : कटे हुए कन्दों का भण्डारण न करें। अनुशंसित पोटाश की मात्रा का प्रयोग करें। प्याज की रंगीन किस्मों का चयन करें। भंडारण पूर्व थाइरम या कैप्टान 0.2% घोल से कन्द का उपचार करने के बाद भंडारण करें।